शोध सार

प्राकृतिक सुंदरता और खनिज संपदाओं से परिपूर्ण झारखंड खेलों में भी आग्रणी रहा है. रांची के राजकीय बालिका उच्च विद्यालय, बरियातू स्थित हॉकी प्रशिक्षण केंद्र से ही पांच दर्जन से अधिक महिला हॉकी खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व किया. 1928 एम्सटर्डम ओलंपिक में देश को हॉकी में पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक दिलानेवाले कप्तान जयपाल सिंह मुंडा झारखंड के खूंटी के थे, तो 1980 मास्को ओलंपिक में अंतिम बार स्वर्ण पदक हासिल करनेवाली भारतीय हॉकी टीम में झारखंड के सिमडेगा जिले के सिलबानुस डुंगडुंग शामिल थे. विश्व कप हॉकी इतिहास में भारत एकमात्र 1975 में चैंपियन बना. चैंपियन टीम में झारखंड के माइकल किंडो शामिल थे. झारखंड की पुष्पा प्रधान ने अंडर 14, हेलेन सोय ने जूनियर भारतीय और सुमराय टेटे व असुंता लकड़ा ने सीनियर भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तानी की जिम्मेदारी संभाली. तीरंदाजी में डोला बनर्जी, ओलंपियन रीना कुमारी, झानू हांसदा, राहुल बनर्जी, जयंत तालुकदार से लेकर कॉमनवेल्थ चैंपियन दीपिका कुमारी और मुक्केबाजी में ओलंपियन एंथ्रास लकड़ा, दिवाकर प्रसाद, अरुणा मिश्रा ने राज्य को गौरवान्वित किया है. भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान महेंद्र सिंह धौनी ने सफलता के नये कीर्तिमान ही स्थापित कर दिये.

टी-20 और एकदिवसीय क्रिकेट में टीम को विश्व चैंपियन बनाया. सौरभ तिवारी, वरुण एरोन, शहबाज नदीम जैसे क्रिकेटर राष्ट्रीय स्तर पर नयी इबारत लिख रहे हैं.

झारखंड में खेलों का इतिहास (1858-2007) प्रस्तुत शोध कार्य सरल नहीं था, क्योंकि इस विषय में लिखित सामग्री का घोर अभाव है. ब्रेडली बर्ट ने छोटानागपुर को ब्रिटिश सरकार का एक अल्प ज्ञात प्रदेश करार दिया है. प्रस्तुत शोध प्रबंध झारखंड में खेलों के इतिहास का अध्ययन एवं शोध पर आधारित विभिन्न पहलुओं का प्रस्तुतीकरण करता है. इसमें झारखंड के खेल, उसकी विकास यात्रा, खिलाड़ियों की उपलब्धियां, आदिवासी समाज में खेलों के अनोन्याश्रय संबंध पर विस्तार से दृष्टि डाला गया है. ग्रामीण इलाकों में कैसे बांस के डंडे को हॉकी स्टीक का रूप दिया जाता था. हॉकी कैसे आदिवासी समाज के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग और उनकी सांस्कृतिक पहचान बन गयी. इसका सुंदर और विस्तृत विवरण हमने प्रस्तुत किया है.

प्रस्तुत शोध कार्य में विषय और तथ्यों की प्रासंगिकता का चुनाव सावधानीपूर्वक किया गया है, जो झारखंड में खेलों के इतिहास का एक महत्वपूर्ण शोध कार्य प्रस्तुत करने का प्रयास है. प्रस्तुत शोध प्रबंध परिशिष्ट एवं सहायक ग्रंथों की सूची के अतिरिक्त छह अध्यायों में विभक्त है.

प्रथम अध्याय में पृष्ठभूमि का वर्णन है. इसमें अविभाजित बिहार के समय से झारखंड में विभिन्न खेलों की गतिविधियों और खिलाड़ियों की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है. इसमें ईसाई मिशनरियों के झारखंड आगमन के पश्चात राज्य के खेलों की स्थिति और उसमें आये परिवर्तनों के विभिन्न आयामों का वर्णन है. अध्ययन काल (1857-2007) की अवधि से पूर्व राज्य में प्रचलित मुर्गा लड़ाई, गुल्ली-डंडा और तीरंदाजी

जैसे परंपरागत खेलों पर प्रकाश डाला गया है. तीरंदाजी का खेल आदिवासी समाज के जीवन में रचा-बसा है. उनके लिए यह सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और प्रतीक भी है. प्राचीन काल में झारखंड वनों से भरा प्रदेश था. घने वृक्ष थे. आदिवासियों का निवास जंगलों में ही होता था. जंगलों में रहनेवाले ग्रामीण जंगली जानवरों से अपनी रक्षा करने और शिकार के उद्देश्य से तीरंदाजी को अपनाते थे.

धर्म परिवर्तन के उद्देश्य से झारखंड में प्रवेश करनेवाले ईसाई मिशनरियों ने राज्य के खेलों को काफी प्रभावित किया. राज्य में हॉकी के प्रसार का पूरा श्रेय ईसाई मिशनरियों को जाता है. ऐंग्लिकन चर्च छोटानागपुर के प्रथम बिशप जेसी ह्विटली के पुत्र एडवर्ड ह्विटली ने चर्च से जुड़े लोगों की एक टीम बनाकर 1897 में विश्व की प्राचीनतम हॉकी प्रतियोगिता बेटन कप जीत कर तहलका मचा दिया. बाद में आर्क डीकन बने हैमिल्टन ह्विटली ने माली, बावर्ची, बढ़ई, धोबी और सफाई करनेवालों को लेकर तैयार की गयी टीम से 1901 तक यह सफलताएं दोहरायी.

द्वितीय अध्याय में खेलों की उत्पत्ति, उसकी विकास यात्रा, विभिन्न खेल संघों की गतिविधियां और उपलब्धियों का वर्णन है. इस अध्याय में राज्य में प्रचलित पारंपरिक और आधुनिक खेलों का लेखा-जोखा है. इसमें आधुनिक ओलंपिक से लेकर प्राचीन भारत में प्रचलित खेलों का वर्णन किया गया है. राज्य के पारंपरिक खेलों में बित्ती, छूर, गोटी, कित-कित, पहाड़ पनिया, कोना-कोना जैसे खेलों पर प्रकाश डाला गया है. आधुनिक खेलों में राष्ट्रीय खेल हॉकी, तीरंदाजी, क्रिकेट, एथलेटिक, वॉलीबॉल, कुश्ती, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, कबड्डी, लॉन बॉल सरीखे खेलों का राज्य में उदभव, विकास यात्रा और उसकी मुख्य उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया. आधुनिक खेलों की चर्चा विश्व स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर करने के

पश्चात राज्य में संबंधित खेल की उत्पत्ति, प्रगति, और उपलब्धि का वर्णन किया गया.इस अध्याय में राज्य के खेलों के विकास में टाटा स्टील के योगदान की विशेष रूप से चर्चा की गयी है. टाटा फुटबॉल अकादमी देश में फुटबॉल की नर्सरी के रूप में विख्यात है. टाटा आर्चरी अकादमी से डोला बनर्जी, झानो हांसदा, रीना कुमारी, जयंत तालुकदार, राहुल बनर्जी और दीपिका कुमारी सरीखे अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज निकले. टाटा स्टील तीन अकादमियों के अतिरिक्त भी 15 ट्रेनिंग सेंटर का संचालन करता है.

तृतीय अध्याय में राज्य की जनजातीय महिलाएं, समाज और झारखंड की संस्कृति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है. राज्य के खेलों में सर्वाधिक सफलता महिला हॉकी के खाते में ही दर्ज है. राजधानी रांची के बरियातू स्थित हॉकी सेंटर से पांच दर्जन से अधिक जानजातीय महिला हॉकी खिलाड़ियों को देश का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त है. दयामनी सोय, पुष्पा टोपनो, हेलेन सोय, पुष्पा प्रधान, सुमराय टेटे और असुंता लकड़ा को देश की बागडोर संभालने का भी गौरव मिला. विश्वासी पूर्ति और सावित्री पूर्ति सीनियर टीम में उपकप्तान की जिम्मेदारी निभा चुकी हैं. हॉकी के अतिरिक्त तीरंदाजी में भी जनजातीय महिलाओं का वर्चस्व है. पूर्णिमा महतो, झानो हांसदा जैसी तीरंदाजों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राज्य का नाम रोशन किया है. पूर्णिमा की झोली में एशियाई स्वर्ण पदक है, तो झानो के नाम 70 मीटर की स्पर्द्धा में विश्व रिकॉर्ड रहा है. एथलेटिक में विजय नीलमणि खलखो, पुष्पा हस्सा ने जनजातीय महिलाओं को अलग पहचान दिलायी. झारखंड के जनजातीय समाज और झारखंड की संस्कृति का वर्णन भी इस अध्याय में किया गया है.

चौथे अध्याय में झारखंड सरकार की खेल नीति पर विचार-विमर्श किया गया. वर्ष 2007 में झारखंड में खेल नीति लागू की गयी. इसमें राज्य

के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के उदय, खेलों के विकास, खिलाड़ियों को नौकरियों में दो प्रतिशत का आरक्षण, खेल प्रशिक्षकों को पुरस्कार, खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति, ग्रामीण खेलों में खेलों के विकास और प्रतिभा तलाशने पर विशेष जोर दिया गया. खेलों के शिक्षा के साथ जुड़ाव, खेल संघों को अनुदान, खेल संरचना के विकास पर बल दिया गया. इस अध्याय में राष्ट्रीय खेल नीति 2007 और पंचायत युवा क्रीड़ा अभियान (पायका) का भी विशेष रूप से वर्णन किया गया.इस अध्याय में अन्य राज्यों की खेल गतिविधियों से झारखंड की तुलना की गयी.

पांचवें अध्याय में झारखंड के खिलाड़ियों की आर्थिक समस्याओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है. प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण झारखंड के मूल निवासियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है. राज्य के अधिकतर खिलाड़ी निर्धन परिवार से आते हैं. उन्हें अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है. बांस, केंद की लकड़ी और पेड़ की टहनियों को काट कर उसे हॉकी स्टिक का रूप प्रदान किया जाता है. बांस का पौधा जड़ के पास हॉकी स्टिक की तरह टेढ़ा होता है. बांस की गोलाकार जड़ों को छील कर गेंद की शक्ल दे दी जाती है. सखुए के पेड़ की टहनी और सूखे हुए शरीफे का इस्तेमाल भी गेंद के रूप में किया जाता है. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी चमक बिखेर चुके अनेक खिलाड़ियों को घोर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. भारतीय हॉकी टीम की पूर्व कप्तान असुंता लकड़ा को प्रारंभिक दिनों में भाई विमल लकड़ा के जूते पहनकर खेलने पड़े. राज्य की पहली महिला अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी सावित्री पूर्ति को अपना पहला हॉकी स्टिक महुआ बेच कर खरीदना पड़ा.

विश्व कप हॉकी खिलाड़ी गोपाल भेंगरा को दो जून की रोटी जुगाड़ने के लिए पत्थर तोड़ने के लिए विवश होना पड़ा. 1980 मास्को ओलंपिक

रॉची विश्वविद्यालय की पीएच. डी उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध

के स्वर्ण पदक विजेता हॉकी खिलाड़ी सिलबानुस डुंगडुंग ने आर्थिक संकट के दिनों में कई बार ओलंपिक स्वर्ण पदक को बाजार में बेचने का इरादा किया. राष्ट्रीय खिलाड़ी निमुंति धान को अपने अंतिम दिनों में दवा के अभाव का सामना करना पड़ा. अस्पताल में बढ़ते खर्च को देख परिजनों ने भी साथ छोड़ दिया. मृत्यु के पश्चात रात भर शव अस्पताल में पड़ा रहा. छोटानागपुर के पेले के नाम से प्रसिद्ध फुटबॉलर सुधीर तिर्की को अपने अंतिम दिनों में घोर आर्थिक संकट से जूझना पड़ा. दवा के पैसे तक नहीं थे. विश्व चैंपियन महिला मुक्केबाज अरुणा मिश्रा को प्रारंभिक दिनों में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ा. राज्य के युवा निशानेबाज आकाश रविदास के पिता पेशे से ट्रक ड्राइवर हैं. लॉन बॉल्स की राष्ट्रीय खिलाड़ी आरजू रानी मां आंगनबाड़ी सेविका हैं, तो राष्ट्रीय महिला तीरंदाज दीपिका कुमारी के पिता ऑटो चालक हैं. ऐसे परिवार से आनेवाले खिलाड़ियों की समस्याओं को आसानी से समझा जा सकता है. विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी इन खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन किया.

अंतिम अध्याय में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़नेवाले राज्य के खिलाड़ियों की उपलब्धियों का वर्णन है.1928 एम्सटर्डम ओलंपिक के संबंध में सर्वविदित है कि जयपाल सिंह के नेतृत्व में भारतीय टीम ने हॉकी का स्वर्ण पदक जीता. जबकि वास्तविकता यह है कि टीम के अंग्रेज मैनेजर एबी रोजर से मतभेद अथवा आइसीएस फाइनल के कारण उन्हें फाइनल मैच से वंचित होना पड़ा. भारतीय टीम ने ई. पिन्निंजर की अगुवाई में फाइनल मैच खेला और पहली बार ओलंपिक में हॉकी का स्वर्ण पदक प्राप्त किया. इस अध्याय में गुमनामी में रहनेवाले अनेक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों की जीवनी और उपलब्धियों को एक साथ

रांची विश्वविद्यालय की पीएच. डी उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध

सहेजा गया. शोध के क्रम में ज्ञात हुआ कि अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के पास उनके खेल जीवन की उपलब्धियों का कोई भी रिकॉर्ड लिखित रूप से नहीं है. कई खिलाड़ियों ने काफी जद्दोजहद के बाद अपने खेल जीवन की उपलब्धियों को स्मरण किया. खिलाड़ियों के संबंध में लिखित दस्तावेज का अभाव शिद्दत से महसूस किया गया. राज्य के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों में जनजातीय समुदाय का वर्चस्व है. विशेषकर महिला हॉकी और महिला तीरंदाजी में जनजातीय खिलाड़ियों का बोलबाला है. इस अध्याय में पहली बार राज्य के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों की जीवनी, उनके संघर्ष और उपलब्धियों को एकत्रित किया गया है. यह इस दिशा में बेहद अहम दस्तावेज साबित होगा.

शोध के परिशिष्ट में 34वीं राष्ट्रीय खेलों का विस्तृत वर्णन किया गया है. वर्ष 2007 में आयोजन के लिए 34वीं राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी झारखंड को अक्तूबर 2002 में मिली, लेकिन अपरिहार्य कारणों से 2007 में आयोजित होनेवाला राष्ट्रीय खेल फरवरी 2011 में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ. राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी के पश्चात राज्य की आधारभूत खेल संरचना में व्यापक परिवर्तन आया. रांची के होटवार में पशुपालन और वन विभाग की 325 एकड़ भूमि पर मारंग गोमके जयपाल सिंह मुंडा मेगा स्पोटर्स कांप्लेक्स का निर्माण किया गया. इस कांप्लेक्स में एथलेटिक, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, जिमनास्टिक, तैराकी, निशानेबाजी, साइक्लिंग, टेनिस, बैडमिंटन के नौ अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम है. यह विश्व में अपनी तरह का अनूठा है. किसी अन्य देश में एक साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर के इतने स्टेडियम एक ही स्थान पर नहीं है. राष्ट्रीय खेलों के भव्य उदघाटन और समापन के बाद भारतीय ओलंपिक संघ ने 34वीं राष्ट्रीय खेलों को अब तक का सबसे शानदार और भव्य आयोजन करार दिया.

राँची विश्वविद्यालय की पीएच. डी उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध

सहायक ग्रंथ सूची :

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए विभिन्न खेलों के पुराने और वर्तमान खिलाड़ियों से साक्षात्कार लिया गया. दैनिक समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, खिलाड़ियों की आत्मकथा की भी सहायता ली गयी. शोध कार्य पूरा करने में विभिन्न पुस्तकालयों की सहायता ली गयी. इसमें जनजातीय कल्याण शोध संस्थान (रांची), केंद्रीय पुस्तकालय (रांची), राज्य पुस्तकालय (रांची), स्नातकोत्तर इतिहास विभाग पुस्तकालय (रांची), नागपुरी शोध संस्थान (पिठोरिया), खुदाबख्श लाइब्रेरी (पटना), राष्ट्रीय पुस्तकालय (कोलकाता) मुख्य रूप से लाभदायक रहा.

उपसंहार :

इस शोध कार्य को पूरा करते हुए मैंने यह अनुभव किया है कि राज्य में खेलों के विकास से संबंधित ठोस और प्रमाणिक तथ्यों का घोर अभाव है. राज्य सरकार द्वारा खेलों के विकास के लिए उठाये गये प्रयास धरातल तक नहीं पहुंच पा रहा है. इसके बावजूद राष्ट्रीय स्तर खिलाड़ियों का उदय व्यक्तिगत चमत्कार है. राज्य की 60 से अधिक अंतरराष्ट्रीय महिला खिलाड़ियों ने देश का प्रतिनिधित्व किया. दर्जनों पुरुष खिलाड़ियों ने एशियाई खेलों, सैफ खेल, विश्व कप, राष्ट्रमंडल खेल और ओलंपिक जैसी स्पर्द्धाओं में पदक जीते. इसप्रकार झारखंड के खेलों का इतिहास काफी गरिमापूर्ण और गौरवशाली है.

निष्कर्ष के बिंदु

1. राज्य के खेल संघों के पास संबंधित खेल के राज्य में उदय, विकास और उपलब्धि का कोई लेखा- जोखा नहीं.
2. अनेक खिलाड़ियों के पास अपनी उपलब्धि और खेल जीवन के लिखित विवरण का अभाव
3. खेल नीति 2007 का पालन नहीं.
4. खेल अधिकारियों की कमी
5. केंद्रीय खेल योजनाओं का सही क्रियान्वयन नहीं
6. खेल संघों में पद की लड़ाई
7. सरकारी अनुदान का खेल संघों द्वारा गलत इस्तेमाल.
8. रोजगार की तलाश में खिलाड़ियों का पलायन.
9. ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों की आधारभूत संरचना का अभाव.
10. स्कूली स्तर पर खेलों को प्रोत्साहन नहीं.

शाहनवाज कुरैशी